विक्रम और बेताल

पात्र : विक्रम, बेताल, राजा, मंत्री, दो सेवक, पाँच अंगुलियाँ

(नेपथ्य)

हमेशा की तरह विक्रम ने बेताल को अपने वश में किया और कंधे पर लादकर चल पड़ा। रास्ता काटने के लिए बेताल ने विक्रम को कहानी सुनानी शुरू की पर एक शर्त रखी।

बेताल– चल रास्ता काटने के लिए मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूँ पर याद रखना, ज्योंहि तूने मुँह खोला, मैं उड़ जाऊँगा।

(नेपथ्य)

एक राज्य में हाथरस नामक राजा राज्य करता था। अपनी शक्ति तथा सूझबूझ के लिए काफी प्रसिद्ध था। उसकी अध्यक्षता में अनेक रचनात्मक कार्य संपन्न हुए। उसके राज्य में सभी खुशहाल थे। जानते हैं, उसकी प्रजा कौन थी? उसकी प्रजा थी उसकी अंगुलियाँ। सभी अंगुलियों में आपस में प्रेम, सहयोग, सद्भावना और अनुशासन था। इन्हीं गुणों के आधार पर उन्होंने मनभावन भवनों का निर्माण किया, दिलों को जोड़ने वाले पुल बनाये, सुन्दर उद्यानों का निर्माण किया। अचानक समय ने करवट ली। परस्पर प्रेम भावना, स्वार्थ में बदल गई। वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष के वश अपने को बड़ा दिखाने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। सभी अंगुलियों में मैपन की बीमारी फैल गई

(सामूहिक कोलाहल) – मैं बड़ा..मैं बड़ा..नहीं, मैं बड़ी हूँ। अरे नहीं, मैं बड़ा हूँ। नहीं-नहीं मैं बड़ी हूँ। अबे जा-जा, मैं बड़ी हूँ।

कनिष्ठिका – ओ हो! निर्णय कौन करे कि बड़ा कौन है?

अनामिका – अरे! चलो, राजा के पास चलते हैं।

मध्यमा – हाँ, हाँ, हमारा राजा बड़ा सयाना और गुणवान है।

तर्जनी – हाँ, राजा का जो भी निर्णय होगा, हमें मान्य होगा। (सबसे पूछते हैं)

मान्य होगा ना! चलो, चलो, सभी चलते हैं। (राजा के पास जाने हेतु सबका प्रस्थान)

(राजा के सम्मुख पहुँचकर)

समवेत स्वर में – प्रणाम राजन!

राजा (धीर गंभीर स्वर में) – कहिए, अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका, आप सभी का यहाँ कैसे आना हुआ?

मध्यमा – हम बड़ी समस्या में हैं महाराज! हमारा निर्णय कीजिए कि हम सबमें बड़ा कौन है? हम आपके आभारी होंगे।

राजा – मैं अपना निर्णय दूँ, उससे पूर्व आप सभी बारी-बारी से अपनी-अपनी विशेषताएँ बताइए ताकि मैं समझ सकूँ कि आप अपने आप को बड़ा क्यों मानते हैं!

(सभी एक-दूसरे को निहारने लगते हैं। तभी सर्वप्रथम अंगूठा सामने आता है और अपनी विशेषता का बखान करता हे। तत्पश्चात् क्रमश:.सभी अंगुलियाँ आत्मश्लाघा करती हैं)

अंगूठा –

दिखने में मैं छोटा-नाटा

मोटा हूँ, मतवाला हूँ।

गुरुभक्ति में वचनबद्ध हो

गर्दन तक कटवाता हूँ

बड़े-बड़े कामों को देखो,

बड़ी शान से करता हूँ

बना भिखारी को अधिकारी

निर्बल को बल देता हूँ।

तर्जनी –

तर्जनी हूँ नाम से,

सबको तारने वाली हूँ।

ईसा, मुहम्मद, नानक की

प्रभु से तार जुड़ाने वाली हूँ।

मैं शक्तिपुंज रणभेरी हूँ,

स्वदर्शन चक्रधारी हूँ।

मैं दुष्टों की संहारी हूँ,

मैं दुष्टों की संहारी हूँ।

मध्यमा –

सबसे लंबी-ऊँची दिखती,

समभाव संतुलन रखती

मैं सबसे बलवान

हस्त-किले की शान

मैं शोभा-शृंगार राज्य की,

पतली, लंबी विजय ध्वज-सी

(सभी को संबोधित करती हुई)

आइए, आइए, सारे एक कतार में

आ जाइए। लीजिए, देखिए हूँ ना मैं सबसे बड़ी

प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता?

(राजा की मुखाबित होकर) महाराज, आप ही निर्णय दीजिए, सबसे बड़ी हूँ ना।

अनामिका –

मैं तो हूँ सबसे निराली,

भले कहो मुझको मतवाली

मंगल वेला में मुसकाती

भले अनामिका ही कहलाती

राजा का अभिषेक कराती

भगवान का नैवेद्य कराती।

कनिष्ठिका –

दिखने में मैं नन्ही-दुर्बल

हूँ बड़ी बलवार रे भैया

गोवर्धन उठाने वाली

सहयोग का पाठ पढ़ाने वाली

मन बनो अनजान रे भैया

हूँ मैं बड़ी महान रे भैया

(सभी को सुनने के बाद राजा सोच मुद्रा में डूब जाते हैं)

सभी का इकट्ठा स्वर –

महाराज, शीघ्र निर्णय दीजिए। हमें आपका निर्णय स्वीकार है।

(नेपथ्य में)

इतनी कहानी सुनाने के बाद बेताल रुक गया और उसने विक्रम से एक सवाल किया। बता विक्रम इन पाँचों में कौन बड़ा है?

बेताल – राजा विक्रम तू बड़ा न्यायी है, ज्ञानी है, बुद्धिमान है तो न्याय कर। जल्दी बता, वर्ना मैं तेरे सिर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

विक्रम – बेताल, सभी उंगलियाँ अपनी-अपनी जगह पर ठीक हैं। सबकी अपनी-अपनी विशेषता है। किसी को भी छोटा-बड़ा नहीं कह सकते। पर फिर भी कोई भी अकेली हर कार्य नहीं कर सकती। जितने भी बड़े-बड़े कार्य इन्होंने किये हैं, आपस में मिलकर किये हैं। सब मिल जायें तो बड़े से बड़ा कार्य असंभव लगने वाला कार्य भी कर सकती हैं। इसलिए कहा गया है, एकता में बल है।

राजा – सचमुच हैं तो आप सभी गुणवान, मैं आपकी योग्यता को स्वीकार करता हूँ पर मैं अपना निर्णय दूँ उससे पूर्व आपको एक कार्य करना होगा।

सभी समवेत स्वर में – कैसा कार्य? आप आज्ञा दीजिए महाराज, हम हर कार्य करने को तैयार हैं।

(राजा मंत्री को इशारे से बुलाता है, कुछ मंत्रणा करता है। मंत्री बाहर जाता है। थोड़ी देर पश्चात् रूमाल से ढका बड़ा थाल लेकर अंदर आता है और राजा के सामने रख देता है। सभी अंगुलियाँ आपस में फुसफुसाने लगती हैं, उत्सुकता दिखाती हैं)

राजा (मंत्री को आदेश देते हुए)- यह रूमाल हटाइए।

(मंत्री रूमाल उठा देता है)

राजा (अंगुलियों की ओर इशारा करके) – आपके सामने यह बूंदी से भरा थाल है। आप सभी को इस बूंदी से एक-एक लड्डू बनाना होगा। जो लड्डू बनाने में समर्थ होगा, वही बड़ा कहलाएगा।

(गर्व के साथ इठलाता हुआ अंगूठा सर्वप्रथम आगे आता है, प्रयास करता है)

अंगूठा – महाराज यह तो बड़ा कठिन है, मैं न कर सकूँगा।

प्रथम अंगूली – मैं भी लड्डू नहीं बना सकती।

दूसरी अंगुली – बड़ा मुश्किल है।

तीसरी अंगुली – असंभव कार्य है।

छोटी अंगुली – ओहो!

(सभी अपने-अपने प्रयास में असफल होकर, गर्दन झुकाकर उदास-हताश खड़े हो जाते हैं)

राजा – उदास न हों, आप सभी गुणवान हैं। आप यह कार्य कर सकते हैं पर एक शर्त है, आप सभी मिल जाइये और फिर लड्डू बनाइए।

(सभी एक साथ मिलकर प्रयास करते हैं। तुरंत एक सुंदर लड्डू बन जाता है)

सभी (उमंग-उत्साह एवं जोश भरे स्वर में) – बन गया! बन गया! अरे. यह तो बड़ी आसानी से बन गया। मेहनत भी कम और समय भी कम लगा। राजन, आपने तो हमारी आंखे ही खोल दी। सच में एकता में बड़ा बल है। संगठन की शक्ति से बड़े-बड़े कार्य भी सहज हो जाते हैं।

बेताल – वाह विक्रम वाह, ठीक न्याय किया, पर एक भूल कर गया ना, मैंने तुझे कहा था कि तू बोलना नहीं, तू बोलेगा तो मैं छूमंतर हो जाऊँगा। तू बोला तो मैं जा रहा हूँ।

विक्रम – बेताल, मैं तुझे नहीं छोडूँगा।